THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
ISSN: 3048-8923
THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues–3 July-September: 2026

सत्यवीर नाहड़िया की हरियाणवी रचनाधर्मिता में ग्राम्य जीवन

डॉ. शिवानी शर्मा[1], मनीषा कुमारी[2]

1. शोध निर्देशिका, हिन्दी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)।
2. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)।

सारांश (Abstract)

हरियाणवी लोक साहित्य में हरियाणवी बोली बेहद समृद्ध, प्रभावशाली, प्राचीन एवं ऐतिहासिक रही है। हरियाणवी साहित्य के युवा रचनाकार सत्यवीर नाहड़िया का हरियाणवी साहित्य में योगदान अतुलनीय है। उनका साहित्य लेखन अत्यंत प्रभावशाली, मौलिक, विषय के अनुरूप, प्रासंगिक व लोक जीवन से सराबोर है। उन्होंने अपने साहित्य लेखन में ग्रामीण जीवन के मुंह बोलते गहरे शब्द–चित्र खींचे हैं। उनके लोक साहित्य में ग्रामीण लोक जीवन में रची–बसी ग्रामीण लोक संस्कृति से जुड़े रीति–रिवाज, भाईचारा, पर्व–उत्सव, खान–पान, खेल–कूद, गीत–संगीत, खेती–बाड़ी, देश–प्रेम, लोक–परंपराएं, पशु–पक्षी और प्रकृति तथा ऋतुओं के सतरंगी रंगों का भावपूर्ण चित्रण हुआ है। उनकी रचनाओं में लोक संस्कृति की गहरी छाप नजर आती है और यह लोक मन के सभी भावों को हूबहू चित्रित करती है।

मुख्य शब्द (Key words): *लोक साहित्य, समृद्ध, ऐतिहासिक, अतुलनीय, प्रासंगिक, शब्द–चित्र।*

ग्रामीण परिवेश का वर्णन उन्होंने हरियाणवी शब्दावली में बड़ी सहजता से किया है। ग्राम्य जीवन में रची–बसी लोक परंपराओं, मान्यताओं और पूर्वजों की दूरगामी सोच को नाहड़िया जी ने अपनी रचनाओं में सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। जीवन के यथार्थ व शाश्वत सत्य को उन्होंने अपनी रचना 'ठाडा मार रोवण दे ना' में इस प्रकार वर्णित किया है।

कण–कण बीच समाया सै।
उसकी न्यारी माया सै ।।
जिसनै ढूँढ्या साच्चे मन तै,
उसनै हरदम पाया सै ।।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
ISSN: 3048-8923
THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues–3 July-September: 2026

उसनै इक दिन जाणा पक्कम,
जो इस जग म्हं आया सै।।
अपणा साच्चा बस वो हे सै,
बाकी जगत पराया सै।।
चमक–चांदणी जो दिक्खै या,
यो नूर उसी का छाया सै।।

नाहड़िया जी की ग्राम्य जीवन से जुड़ी रचनाओं में जहां एक ओर सत्य दृष्टिगोचर होता है, वहीं दूसरी ओर ये जीवन की हकीकतों को उजागर करते हुए संवेदनशीलता से ओत–प्रोत हैं। लोक जीवन से जुड़े अनेक बिंदुओं को उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आम जन तक पहुंचाया है।

ऐसी ही एक रचना 'बख़त–बख़त की बात' में उन्होंने लोक जीवन से जुड़ी विसंगतियों, कुरीतियों, राष्ट्रीयता, नारी–सम्मान, भारतीय संस्कृति, देश–प्रेम, सामाजिक परिवर्तन, राजनीति व लोक परंपराओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है।

हरियाणा सदा से वीरों की भूमि रही है। इस वीर भूमि के वीरों की वीरता का बखान कवि ने अपनी रचना 'बख़त–बख़त की बात' में इस प्रकार वर्णित किया है कि श्रोताओं को यहां की वीरता के साक्षात दर्शन होते हैं तथा ये उनकी स्मृति में चिरस्थाई बने रहते हैं।

इसकी न्यारी बात सै, आन–बान अर स्यान।
माट्टी या हरयाणवी, सै वीरां की खान ।।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा तथा अंग्रेजी के प्रति अंधे मोह, जो राष्ट्रीय एकता के लिए चिंता का विषय है, कवि ने अपने इस दर्द को 'बख़त–बख़त की बात' में इस प्रकार बयां किया है।

हिंदी–डे पै सुण दिखे, लाकै कुरसी–मेज ।
बेट्टे हिंदी मात के, होण लगे अँगरेज ।।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
ISSN: 3048-8923
THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues–3 July-September: 2026

नारी के प्रति सम्मान व कोमल भावों को नाहड़िया जी ने अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है। उन्होंने नारी को मां के रूप में सबसे वंदनीय बताया है। मां की ममता के अद्वितीय रूप को उन्होंने अपनी रचना 'बख़त–बख़त की बात' में बहुत सुंदर ढंग से वर्णित किया है।

माँ ममता की मूरती, घर–कुणबे की डोर।
माँ की माया का कितै, नहीं ओर अर छोर ।।

ग्रामीण संस्कृति में आई विकृति को उन्होंने अपनी रचना 'नाहड़िया की कुंडलियाँ' में बड़े प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है जो आज की बिगड़ती व्यवस्था पर एक कटाक्ष भी है और युवा पीढ़ी के लिए एक चेतावनी भी।

प्यारा था रै गाम यो, पर इब रावणराज।
भाग्गण लाग्ये छोड़ कै, भाज सकै तै भाज।
भाज सकै तै भाज, काज सभ उलटे होर्ये।
घर–घर इबतै बीज, बिघन के न्यारे बोर्ये।
नाहड़िया कबिराय, गाम इब होग्या न्यारा।
लोकलाज ग्ये भूल, गाम था सभतै प्यारा।।

नवीन पीढ़ी को सत्य और ज्ञान का मार्ग दिखाने वाली हमारी पुरातन संस्कृति में पूर्वजों द्वारा दी गई सीख को नाहड़िया जी ने अपनी रचना 'नाहड़िया की कुंडलियाँ' में विशेष ज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया है क्योंकि आज शिक्षा के साथ–साथ मूल्यों की आवश्यकता अधिक है।

आच्छी करणी कर सदा, उलटी राह् मत चाल।
करणी सभ भरणी पड़े, आज नहीं तै काल।
आज नहीं तै काल, चाल ना टेढ़ी करणा।
करकै उलटे काम, पड़ै पग–पग पै मरणा।
नाहड़िया कबिराय, कार ना करिये काच्ची।
सभ किम देक्खै राम, सदा हे करिये आच्छी ।।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
ISSN: 3048-8923
THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues–3 July-September: 2026

नाहड़िया जी की रचना 'एक बख़त था' में एक ओर जहां प्रकृति प्रेम, तीज–त्योहार और देशभक्ति का वर्णन है, वहीं दूसरी ओर टूटते रिश्तों की डोर, हावी होती पश्चिमी संस्कृति व बाज़ारवाद का भी संदेश दिया है।

एक बख़त था बैसाखी नै, भँगड़ा पाया करते।
देख्या सोन्ना खेत्तां कै म्हां, गिद्दा गाया करते।
कठ्ठे होकै सज धज सारे, मेलै जाया करते।
ओ जट्टा आयी बैसाखी, राग सुणाया करते।
वीरां सीस नवाया करते, जलियावाला बाग दिखे।
अपणी सबकी ढपली होग्यी, अपणे होग्ये राग दिखे ।।

पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति प्रेम का ग्राम्य संस्कृति में विशेष स्थान रहा है। गौ माता का पूजन, खेजड़ी और पीपल जैसे वृक्षों को शुभ मानना तथा तीज–त्योहारों पर इनका पूजन प्रकृति संरक्षण के अनूठे उदाहरण हैं। 'एक बख़त था' रचना में जहां एक ओर प्रकृति प्रेम का सुंदर रूप दर्शाया गया है, वहीं आधुनिक युग की अंधाधुंध दौड़ में प्रकृति के नुकसान की गहरी पीड़ा को बड़े ही मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

एक बखत था पीपल नै सब, सीस नवाया करते।
तिरवेणी म्हं बड़–पीपल अर, नीम लगाया करते।
ऊठ सबेरै नित पीपल म्हं, नीर चढ़ाया करते।
पीपल–पूज्जा लिछमी–पूज्जा, बड़े बताया करते।
गीता–ग्यान सुणाया करते–पीपल बणे मुरारी।
इब कलयुग म्हं पीपल पै बी, चाल्लण लाग्यी आरी ।।

ग्राम्य संस्कृति में रचे–बसे लोक गीतों में समाज के हर पहलू को नाहड़िया जी ने अपनी वाणी दी है। ग्रामीण संस्कृति की रीढ़ कहे जाने वाली किसान की व्यथा भी इनकी कलम से अछूती नहीं रही। 'एक बख़त था' रचना में कवि ने किसान की व्यथा का मार्मिक वर्णन किया है।

भूक्खा प्यासा–ठा मंडास्सा, दिन अर रात कमावै।
टूट्टी झोप्पड़, माणस खोप्पड़, मन म्हं महल बणावै।
हो छाह खाट्टी–रेह् रेह् माट्टी, गरड़–फरड़ जब आवै।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
ISSN: 3048-8923
THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues–3 July-September: 2026

कहते दात्ता–रह पछतात्ता, हाथ किमै ना थ्यावै।
भीज्जी पूली हात्थां ठावै–भर आँख्यां म्हं पाणी।
जमींदार के सत्तर बैरी, या पुरखां की बाणी ।।

देश पर कुर्बान होने वाले हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्र के वीरों के बलिदान व शहादत का वर्णन उन्होंने अपनी रचना 'चाक्की आला चून' में जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। यह अभिव्यक्ति आने वाली पीढ़ियों के लिए तो प्रेरणादायी रहेगी ही साथ में उन्हें देश–प्रेम व शहादत परंपरा से रूबरू भी करवाती रहेगी।

हरियाणा परदेस की, सभतै न्यारी बात।
वीरभूमि के नाम तै, दुनिया म्हं बिख्यात।
दुनिया म्हं बिख्यात, रात–दिन खूब कमावैं।
सीम–खेत म्हं देख, सदा वै धरम निभावैं।
ओलंपिक लग योह, खेल का खास ठिकाणा।
लिखै नया इतिहास, सदा न्यूँ यो हरियाणा।।

हरियाणा प्रदेश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, शौर्य व बहुआयामी संस्कृति को उन्होंने 'हरियाणा के रंग' रचना में बहुत सुंदर ढंग से उकेरा है।

हरियाणा सै देस वो, आये जित भगवान।
दिया जगत तै आण कै, गीत्ता आळा ग्यान।
गीत्ता आळा ग्यान, ध्यान का दिखे ठिकाणा।
कुलछेत्तर मैदान, ग्यान का घर हरियाणा।।

इसी प्रकार हरियाणा प्रदेश के ग्रामीण परिवेश की सुंदर बानगी 'हरियाणा के रंग' रचना में इस प्रकार व्यक्त की गई है कि पढ़ने व सुनने वाले को हरियाणवी संस्कृति की झलक दिखाई देती है।

हरियाणा सै देस वो, हरे–भरे जित गाम।
डगर नगर की पाँवती, न्यारी चहक तमाम ।
न्यारी चहक तमाम, अमन का दिखे ठिकाणा।
हरियाला यो देस, अनूठा न्यूँ हरियाणा ।।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
ISSN: 3048-8923
THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues–3 July-September: 2026

निष्कर्ष :

इस शोध पत्र में हरियाणा प्रदेश की बहुआयामी संस्कृति, कला, साहित्य, लोक जीवन व लोक मूल्यों के सभी रंगों का भावपूर्ण वर्णन देखा जा सकता है। लोक जीवन में सत्यवीर नाहड़िया की रचनाएं अतुलनीय हैं तथा ये वर्तमान, भूत व भविष्य में भी प्रासंगिक रहेंगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

ठाडा मार रोवण दे ना–सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–33
बख़त–बख़त की बात–सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–27, 31, 108
नाहड़िया की कुंडलियाँ–सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–29, 31
एक बख़त था–सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–36, 54, 62
चाक्की आला चून–सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–70
हरियाणा के रंग–सत्यवीर नाहड़िया, पृष्ठ–16, 17